कुमार जीवन - 75

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अभी फारेन का कुमार ग्रुप - बहुत अच्छी भट्टी की। बहुत अच्छा लगा। कुमार कमाल करेंगे। कुमार जो चाहे वह कर सकते हैं। कर रहे हैं और आगे भी करेंगे। करना है ना! होशियार है सब। बापदादा चेहरों से ही देख रहे हैं कि सभी हिम्मत वाले हैं। **हिम्मत की मुबारक हो।** बहुत अच्छा। बापदादा ने देख लिया ना। अभी तो कम्पलेन नही होगी ना हम को कोई ने देखा नही। एक एक को देख लिया। अच्छी मेहनत की है। (20-02-2001)

➳ _ ➳ आज यूथ ग्रुप आया है। यूथ बहुत हैं। बापदादा यूथ ग्रुप को वरदान देते हैं कि सदा आबाद रहना। एक भी खज़ाना बरबाद नहीं करना, आबाद रहना, आबाद करना। लौकिक गुरू लोग आशीर्वाद देते हैं आयुश्वान भव और बापदादा कहते हैं शरीर की आयु तो जितनी है उतनी रहेगी इसीलिए शरीर की आयु के हिसाब से आयुश्वान भव का वरदान नहीं दते हैं लेकिन **इस ब्राह्मण जीवन में सदा आयुश्वान भव।** क्यों? ब्राह्मण सो देवता बनेंगे।

➳ _ ➳ तो आयुश्वान तो होंगे ना! यूथ की एक विशेषता होती है। आप यूथ अपनी विशेषता को जानते हो? क्या विशेषता होती है, जानते हो? क्या विशेषता है आप में? (जो चाहे वह कर सकते हैं) अच्छा - कर सकते हो? अच्छी बात है, दुनिया के हिसाब से कहते हैं, यूथ जिद्दी बहुत होते हैं, जो सोचेंगे वह करके दिखयेंगे। वह लोग उल्टा कहते हैं लेकिन यहाँ **ब्राह्मण यूथ जिद्दी नहीं है लेकिन अपनी प्रतिज्ञा पर पक्के रहने वाले हैं।** हटने वाले नहीं है। ऐसे हो यूथ? हाथ उठाना तो बहुत सहज है। बापदादा खुश है हाथ उठाना, यह भी हिम्मत है ना। लेकिन **रोज़ अमृतवेले बाप से की हुई प्रतिज्ञा कि हम इस ब्राह्मण जीवन की प्राप्ति से, सेवा से कभी भी संकल्प में भी हटेंगे नहीं। इस हिम्मत को, प्रतिज्ञा को रोज़ दोहराओ और बार-बार चेक करो कि हिम्मत जो रखी, संकल्प किया वह प्रैक्टिकल में हो रहा है ?** (03-02-2002)

➢➢ भगवान अन्तर्यामी नहीं है परन्तु अन्तर्यामी है

➳ _ ➳ निरंतर यह स्मृति रहे की

→ भगवान हर पल मुझे देख रहा है

- हम कहीं भी अकेले नहीं है

→ भगवान हर पल मेरे हर संकल्प को पड़ रहा है

➳ _ ➳ भगवान सब कुछ जानता नहीं

→ पर सब कुछ जानता है

➳ _ ➳ परन्तु भगवान की दृष्टि परम साक्षी है

→ कहीं भी हस्तशेप नहीं करता है

- जो कुछ हो रहा है... उसे होने देता है

- उसके लिए सब धुप छाँव का खेल है

→ यदि वह हस्त्षेप करने लगे और मनुष्यों के कर्मों से प्रभावित होने लगे तो

- फिर उसकी स्थिति भी प्रभावित हो जायेगी

→ किसी के जीने मरने से वह प्रभावित नहीं होता

- उसके लिए तो सभी मिटटी के पुतले हैं
  - इसीलिए वह सदैव अचल रहता है

→ कोई उसकी महिमा करे या फिर निंदा करे

- वह सब कुछ स्वयं में समा लेता है
- निंदा और प्रशसा उसे प्रभावित नहीं करते
  - निंदा से दुखी होने का कारण है :- प्रशंसा की अपेक्षा
- प्रशंसा के शिखर पर पहुँच कर उससे अप्रभावित रहना बहुत ऊंची अवस्था है
  - "Being An Instrument" का भाव अपनी चरम अवस्था में रहता है ऐसी स्थिति में

→ यह ज्ञान भगवान की नसों में समाया हुआ है की

- यह सिर्फ एक नाटक चल रहा है

➢➢ सच्चे योगी के मुख्य लक्षण

➳ _ ➳ निंदा स्तुति मान अपमान में समान रहना

➳ _ ➳ अभिमान और अपमान पर विजय

→ यही सेवाओं में असफलता के 2 मुख्य द्वार हैं

- आप सिर्फ सेवा नहीं करते हो
  - रूहानी सेवा करते हो
- आप सिर्फ Service नहीं करते हो
  - Godly Service करते हो
- आप सिर्फ खिदमतगार नहीं हो
  - खुदाई खिदमतगार हो
- आप सिर्फ सेवाधारी नहीं हो
  - ईश्वरीय सेवाधारी हो

➳ _ ➳ सदैव गुप्त रहने से अति शक्तिशाली स्थिति का अनुभव / "कोई मुझे देख ले" - यह भाव नहीं होना चाहिए

→ अमृतवेला करते हुए

→ ज्ञान मंथन करते हुए

→ सेवाएं करते हुए

→ त्याग करने पर

➳ _ ➳ जो जितना गुप्त है... वह उतना ही शक्तिशाली है

→ जैसे बाबा

→ दिखावे से प्रशंसा जरूर मिलेगी

- परन्तु वह शक्ति नहीं बनेगा

→ तपस्या का अर्थ ही है :- मैं को मिटाना

- तो फिर उसी तप का दिखावा ?

→ ऋषि मुनि जंगलो में जाकर तपस्या करते थे ताकि

- किसी को पता न चले
  - ऐसी स्थिति में की गयी तपस्या से ही परम बल प्राप्त होता है

→ तपस्या जितनी गुप्त होगी

- अनुभव उतना ही श्रेष्ठ होगा